पद २९३

(राग: झिंजोटी - ताल: दीपचंदी)

निर्गुण सगुण मी गायीना। मी म्हणणें मज साहिना।।ध्रु.।। कानाविण मज एकणें। डोळ्याविण रूप देखणें। जिह्वेविण रस चाखणें। प्राणाविण परिमळ घेणें।।१।। पायाविण नीट चालतों। वाचेविण स्पष्ट बोलतों। त्वचेविण सुख-दुःख सोशितों। इंद्रियाविण भोग भोगितों।।२।। नामाविण मज माणिक नाम। कामाविण मज सर्विह काम। धामाविण मज मंगल धाम। आकाराविण मजला सव्य वाम।।३।।